टिप्पणी

223hi13

13

भारतीय स्थापत्य कला

कभी-कभी यह याद दिलाना भी बहुत आवश्यक हो जाता है कि हमारी ही वह सभ्यता है जो प्राय: 4500 वर्ष पुरानी है और जिसने हमारे जीवन और समाज की प्राय: प्रत्येक वस्तु पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। कल्पना कीजिए, यूनेस्को ने 830 विश्वप्रसिद्ध विरासत के स्मारकों की सूची बनाई है जिसमें से 20 भारत में ही हैं। यह केवल छ: देशों से कम हैं। क्या यह इस प्राचीन भूमि के, लोगों के, और प्रकृति प्रदत्त वरदानों के श्रम और रचनात्मक प्रतिभा का पर्याप्त प्रमाण नहीं हैं। चाहे वो एक ओर भीमबेट का की प्रागैतिहासिक गुफाएँ हों या असख्य महल हों, मस्जिदें हों, मन्दिर हों, गुरुद्वारे हों, गिरजाघर हों या मकबरे हों या फिर विस्तृत शहर और गम्भीर स्तूप हों। दिल्ली, आगरा, जयपुर, मुम्बई और कलकत्ता आदि शहरों का भ्रमण करते हुए आपको अनेक सौन्दर्यपूर्ण भवन दिखाई देंगे। उनमें से कुछ स्मारक हैं, शाही महल हैं, मन्दिर, चर्च, मस्जिद और स्मृतिगृह आदि हैं। इनमें से बहुत से ईशवी पूर्व बनाए गए और कुछ अन्य ईसा के बाद। इस स्थापत्य कला की साक्षी कई पीढ़ियाँ रह चुकी हैं। ये भवन आज भी सशक्त और ऊँचा सिर किए खड़े हैं और हमें उस शानदार बीते हुए युग की याद दिलाते हैं जो हमारा रहा है।

कला और स्थापत्य शैली भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण अंग हैं। बहुत से विशिष्ट पक्ष जो आज हम स्थापत्य कला में देखते हैं, वे भारत के लम्बे इतिहास के मध्य ही विकसित हुए। भारतीय स्थापत्य कला के सबसे प्राचीन और विशिष्ट साक्ष्य हड़प्पा सभ्यता के शहरों में पाये गए हैं। जिनसे वहाँ की शहरी-योजना की अनोखी शैली की विलक्षण जानकारी मिलती है। हड़प्पा काल के बाद की स्थापत्य शैलियों को हिन्दू, बौद्ध और जैन स्थापत्य के रूप में बाँटा गया। मध्यकाल स्थापत्य की फारसी और देशी शैलियों के संश्लेषण का दौर था। इसके बाद औपनिवेशिक काल में भारतीय स्थापत्य पर पश्चिमी स्थापत्य शैलियों के प्रभाव पड़े। इस प्रकार भारतीय स्थापत्य कला का निर्माण देशी-शैलियों और बाहरी प्रभावों के संश्लेषण से हुआ जिसके फलस्वरूप इसकी अपनी एक अनोखी विशेषता बन पाई है।

टिप्पणी

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :–

- विभिन्न कालों में भारतीय स्थापत्य एवं मूर्तिकला की विशेषताओं और शैलियों की पहचान कर सकेंगे;
- विभिन्न कालों के दौरान भारतीय स्थापत्य के विकास क्रम का उल्लेख कर सकेंगे;
- भारतीय स्थापत्य के विकास में बुद्ध धर्म और जैन धर्म के योगदान को पहचान सकेंगे;
- समृद्ध मंदिर-स्थापत्य कला को विकसित करने में गुप्त, पल्लव तथा चोल शासकों की भूमिका की सराहना कर सकेंगे;
- मध्यकाल के स्थापत्य को प्रभावित करने वाले विभिन्न प्रभावों को पहचान सकेंगे;
- औपनिवेशिक शासन के दौरान महत्त्वपूर्ण स्थापत्य शैलियों को चिह्नित कर सकेंगे।

13.1 स्थापत्य-कला उद्भव और भारतीय परिप्रेक्ष्य

स्थापत्य कला कोई आधुनिक परिदृश्य नहीं है। यह तब जन्मा जब आदिम मानव ने रहने के लिए अपना आश्रय गुफाओं में बनाना शुरू किया। जब मनुष्य घने जंगलों के प्राकृतिक निवास से निकला तो उसने अपने लिए घर बनाना शुरू किया। जब मानव का सौन्दर्य बोध जागा तो उसने बेहतर स्थान खोजकर अपने लिए आंतरिक और खुद को लुभाने वाले आकर्षक मकानों का निर्माण आरम्भ किया। इस प्रकार आवश्यकता, कल्पना, सामग्री, कौशल, स्थान और बनाने वालों की क्षमताओं के संगम से वास्तुकला का जन्म हुआ।

स्थापत्य कला के रूप और निर्माण का विवरण

विभिन्न कालों में वास्तु या स्थापत्यकला ने स्थानीय और प्रादेशिक सांस्कृतिक परंपराओं, उपलब्ध सामग्री, सामाजिक आवश्यकताओं, आर्थिक समृद्धि, विभिन्न समय के आनुष्ठानिक प्रतीकों को ध्यान में रखा है। अत: वास्तुशास्त्र का अध्ययन हमें सांस्कृतिक विभिन्नताओं का ज्ञान कराता है और हमें भारत की समृद्ध परम्पराओं को समझने में सहायता करता है। भारतीय वास्तुशिल्प का विभिन्न कालों में, देश के विभिन्न भागों में, विकास हुआ। प्राक्-इतिहास और ऐतिहासिक कालों में हुए स्वाभाविक और प्राकृतिक विकास के अतिरिक्त इतिहास में घटित महान व महत्त्वपूर्ण घटनाओं से भी भारतीय वास्तुशिल्प प्रभावित हुआ। स्वाभाविक रूप से उपमहाद्वीप के महान साम्राज्यों और राजवंशों के उत्थान और पतन ने भारतीय वास्तुशिल्प के विकास पर गहरा प्रभाव डाला। बाहरी प्रभावों और साथ ही देश के विभिन्न भागों के प्रभावों से भी भारतीय वास्तुकला का स्वरूप प्रभावित हुआ। आइये, भारतीय वास्तुशिल्प के विकास पर एक नजर डाले।

टिप्पणी

13.2 हड़प्पा काल

हड़प्पा और मोहनजोदाड़ों तथा सिंधु घाटी सभ्यता के अनेक स्थलों पर हुई खुदाई से एक अत्यंत आधुनिक शहरी सभ्यता का पता चलता है, जहाँ विशिष्ट नगरीय सभ्यता और निर्माण कौशल मौजूद था। अत्याधुनिक निकासी प्रणाली तथा योजनाबद्ध पथों और घरों से पता चलता है कि आर्यों के आने से पहले भारत में एक अति विकसित संस्कृति का अस्तित्व था। सिंधु घाटी सभ्यता के स्थलों की खुदाई भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण की देखरेख में हुई जिसकी स्थापना अंग्रेजों द्वारा की गई थी।

हड़प्पा के लोगों ने मुख्यतया तीन प्रकार के भवनों का निर्माण किया–निवास गृह, स्तम्भों वाले बड़े हॉल और सार्वजनिक स्नानागार।

हड़प्पा के अवशेषों के मुख्य लक्षण हैं–

1. ये अवशेष ईसा पूर्व तीसरी सहस्राब्दी के माने जाते हैं।
2. कुछ महत्त्वपूर्ण निवास स्थल सिन्धु नदी के किनारों पर पाए गए विशेष रूप से उन मोड़ों पर जहाँ जल की आपूर्ति अधिक थी, उत्पादों के परिवहन के साधन थे और नदी के एक ओर प्राकृतिक रूप से सुरक्षित स्थल थे।
3. सभी स्थलों में पाए गए नगरों के चारों ओर बड़ी-बड़ी दीवारें बनवाई गई थीं जिनसे सुरक्षा होती थी।
4. इन नगरों के आयताकार नमूने थे जिनमें सड़कें बनाई गईं जो एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं।
5. सिन्धु घाटी के लोग भवन निर्माण सामग्री के लिए एक विशेष नाप के आकार की पकाई गई ईंटों का प्रयोग करते थे।
6. यहाँ बड़े भवनों के निर्माण के साक्ष्य भी मिले हैं जो शायद प्रशासनिक या व्यापार केन्द्र, स्तम्भों वाले बड़े हॉल, अहाते तथा सार्वजनिक भवन हुआ करते थे। मंदिर के कोई साक्ष्य नहीं मिले हैं।
7. सार्वजनिक भवनों में अन्न भंडार भी हुआ करते थे जहां अनाज का भंडारण किया जाता था। इससे वहां के सुव्यवस्थित संग्रह और वितरण प्रणाली का पता चलता है।
8. बड़े सार्वजनिक भवनों के साथ ही वहां एक कमरे के छोटे घरों के साक्ष्य भी मिलते है जो शायद कामगारों के निवास लगते हैं।
9. हड़प्पा के लोग कुशल इंजीनियर थे, ऐसा उस सार्वजनिक स्नानागारों से पता चलता है जो कि मोहनजोदाड़ो में मिला है। ''विशाल स्नानागर' जैसा कि इसे कहा जाता है अभी तक बना हुआ हैं और इस निर्माण में कोई भी दरार या रिसाव नहीं हुआ है। ऐसा निर्माण जो सार्वजनिक स्नानागार सा प्रतीत होता है इस संस्कृति के कर्मकाण्डीय स्नान और स्वच्छता का प्रतीक है। यह महत्त्वपूर्ण है कि अधिकतर घरों में निजी कुँए, और स्नानघर होते थे।

टिप्पणी

10. पश्चिमी भागों में जहां पर सार्वजनिक भवन और अन्नागार हुआ करते थे वहाँ पर एक प्रमुख दुर्ग मिला है। इसे नगरों पर किसी प्रकार के राजनैतिक सत्ता के शासन के साक्ष्य के रूप में माना जा सकता है।
11. इसके भी साक्ष्य मिले हैं कि दीवारों वाले नगर के चारों ओर किलाबंदी होती थी और उनमें मुख्य द्वार होता था। इससे पता चलता है कि उन्हें हमला हो जाने का खतरा रहा होगा।
12. गुजरात में एक खुदाई स्थल लोथल में बंदरगाह के अवशेष मिले हैं जिनसे इस बात की पुष्टि होती है कि उस समय में समुद्री रास्तों के जरिए व्यापार का विकास हुआ।

एक और असाधारण लक्षण यह था कि नगरों के रिहायशी इलाकों में एक सुनियोजित निकासी व्यवस्था मौजूद थी। घरों की छोटी नालियां मुख्य सड़कों के नजदीक बड़ी नालियों से जुड़ी थीं। यह नालियां ढकी हुई हुआ करती थीं और इनकी सफाई के उद्देश्य से इन्हें पृथक ढक्कनों से ढका जाता था। रिहायशी मकानों की योजना भी बहुत सावधानी से की गई थी। सीढ़ियों की मौजूदगी के भी प्रमाण मिले हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि मकान अक्सर दो मंजिला हुआ करते थे। घरों में दरवाजे किनारें की गलियों की तरफ हुआ करते थे ताकि मुख्य सड़क से धूल घर के अंदर न घुस पाए।

हड़प्पा की स्थापत्य कला का सबसे महत्त्वपूर्ण लक्षण है उनका उत्कृष्ट नगर योजना कौशल और उनके नगर, जिनका निर्माण ज्यामितीय पद्धति या जालीदार प्रारूप के आधार पर किया गया था। सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं और बहुत अच्छी तरह से बिछाई गई थीं। सिन्धु घाटी के नगर नदियों के किनारे बसे हुए थे इसलिए अक्सर वे भंयकर बाढ़ों से बर्बाद हो जाते थे। इसके बावजूद सिंधु घाटी के निवासी उन्हीं स्थानों पर पुनः निर्माण करते थे। इसी कारण खुदाई के दौरान परत दर परत निवास स्थान और भवन मिले हैं। सिंधु घाटी सभ्यता का ह्रास और अंततः विनाश सम्भवत दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में हुआ कैसे हुआ, यह अब तक रहस्यमय बना हुआ है।

> समस्त निर्माणकार्य को अति मजबूत बनाने के लिए खड़िया, मिट्टी, गारे को बहुत अच्छी प्रकार से पका कर ईंटों से मोटी परतें बनायी जाती थीं। इन भवनों की मजबूती आज भी देखी जा सकती है। पिछले पांच हजार वर्ष पहले नष्ट किए जाने पर भी भवनों के यह अवशेष आज भी बचे हुए हैं।

हड़प्पा के लोगों को मूर्तिकला एवं हस्तकला का भी ज्ञान और कौशल प्राप्त था। दुनिया की पहली तांबे की नृत्यांगना की मूर्ति मोहनजोदाड़ो में पाई गई है। योग की मुद्रा में एक पुरुष की मूर्ति खुदी हुई चित्रलिपि वाली मोहरें, पहनने वाले सुंदर आभूषण एवं कूबड़ युक्त बैलों की मूर्तियाँ, एक सींग वाले पशुपति आदि की तस्वीरें भी प्राप्त हुई हैं। चित्र लिपि वाली खुदी हुई मोहरें आदि भी उत्खनन में मिली हैं इसके बाद जो वैदिक आर्य आये, वे लकड़ी, बांस और सरकंडों के मकानों में रहने लगे। आर्य संस्कृति कृषकों की थी अतः बड़े भवनों का अभाव मिलता है। आर्य अपने शाही महलों को बनाने में नष्ट होने वाली सामग्री जैसे लकड़ी आदि का प्रयोग करते थे अतः वे समय बीतने पर नष्ट हो गए। वैदिक

टिप्पणी

भारतीय स्थापत्य कला

काल का एक महत्त्वपूर्ण पहलू 'वेदी' को बनाना है जो शीघ्र ही लोगों की सामाजिक धार्मिक जीवन का आधार बन गई। आज भी हिन्दु घरों में विशेषतया विवाह में अग्निवेदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

आंगन तथा मण्डप में यज्ञशाला की वेदी स्थापत्य कला की महत्त्वपूर्ण आकृति है। हमें गुरुकुलों और आश्रमों के भी प्रसंग मिलते हैं। दुर्भाग्यवश वैदिक काल का कोई भी ढांचा नहीं मिलता है। स्थापत्य कला के इतिहास में भवन निर्माण में ईंट-पत्थर के साथ लकड़ी का प्रयोग महत्त्वपूर्ण योगदान है।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में भारत ने अपने इतिहास के महत्त्वपूर्ण चरण में प्रवेश किया। यहाँ दो नए धर्म जैनधर्म और बौद्धधर्म का उदय हुआ और वैदिक धर्म में परिवर्तन होने लगा।

लगभग उसी समय में बड़े राज्यों का विकास हुआ। इस समय से अर्थात् मगध के साम्राज्य के रूप में विस्तृत होने से स्थापत्य कला को और अधिक प्रोत्साहन मिला। इसके बाद से भारतीय स्थापत्य कला की प्रायः सम्पूर्ण शृंखला की रूपरेखा प्रस्तुत करना सम्भव है।

बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म के उद्भव ने भारत की प्रारंभिक स्थापत्य कला के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। बौद्ध स्तूपों का निर्माण वहीं हुआ जहां बुद्ध के अवशेष रखे गये थे, तथा उन प्रमुख स्थानों में जहां बुद्ध के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटीं। मिट्टी के गारे से सावधानी से तपाई गई छोटी-छोटी ईटों को जोड़कर स्तूप बनाये। एक स्तूप उनके जन्म-स्थान लुम्बिनी में बना है, दूसरा स्तूप गया में बना है जहां पीपल के पेड़ के नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ, तीसरा स्तूप सारनाथ में बना है जहां बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया तथा चौथा स्तूप कुशीनगर में बना है जहां उन्होंने अस्सी वर्ष की उम्र में महापरिनिर्वाण प्राप्त किया।

बुद्ध के अवशेषों को जहां रखा गया तथा वे स्थान जहां बुद्ध के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटीं, वे सभी स्थान आज भारत की महत्त्वपूर्ण स्थापत्य कला के प्रतिमान हैं। जिस संघ में भिक्षु और भिक्षुणी रहते थे आज वे महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थल के रूप में जाने जाते हैं। विहार तथा पठन पाठन एवं उपदेश के स्थान भी महत्त्वपूर्ण स्थान के रूप में उभर कर सामने आए हैं। आम लोगों तथा भिक्षुओं के मध्य शिक्षा तथा आपसी विचार-विमर्श हेतु सामुदायिक भवनों (चैत्य) का निर्माण भी किया गया।

तभी से धर्म ने स्थापत्य-कला को प्रभावित करना शुरू किया। जहां बौद्धों और जैनों ने स्तूपों, विहारों तथा चैत्यों का निर्माण शुरू किया वहीं गुप्त वंश के शासन काल में मंदिरों का प्रथमतः निर्माण शुरू हुआ।

पाठगत प्रश्न 13.1

1. भारतीय संस्कृति के उदय का क्या अर्थ है?

.....

2. हड़प्पा वासियों ने अपनी सभ्यता कैसे बचाई?

.....

3. हड़प्पा के लोगों की यान्त्रिक कुशलता के साक्ष्य कैसे पता लगे?

.....

4. बुद्ध के अवशेष कहाँ रखे गये हैं?

.....

5. बुद्ध की मूर्तियाँ कहां पाई गयी हैं?

.....

6. भारत में पहला मंदिर कब बना?

.....

7. स्तूप, विहार तथा चैत्य के क्या अर्थ हैं?

.....

8. कहां पर खुदाई में बंदरगाह के अवशेष प्राप्त हुए हैं?

.....

13.3 प्राचीन ऐतिहासिक-काल या प्राचीन काल

भारतीय स्थापत्य के एक महत्त्वपूर्ण चरण की शुरुआत मौर्यों के शासन के साथ होती है। मौर्यों की भौतिक समृद्धि तथा नई धार्मिक चेतना ने भारत को हर क्षेत्र में सफलता दिलवाई। यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटोर का राजदूत मेगास्थनीज मौर्यों के दरबार में आया। मेगास्थनीज ने चन्द्रगुप्त मौर्य के महल को स्थापत्य की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि बताया है। चंद्रगुप्त मौर्य का महल विशाल था और लकड़ी का बना हुआ था।

ईसा पूर्व सन् 322-182बीसी में मौर्य काल में विशेषकर अशोक के राज्य में स्थापत्य कला ने अत्यधिक उन्नति की। मौर्यों की कला और स्थापत्य, फारसी और यूनानी प्रभाव को दर्शाते है। अशोक के शासन-काल में अनेक एकाश्म पत्थरों के खंभे स्थापित किए गए। इन खंभों में 'धम्म' की शिक्षाओं को अंकित किया गया

(सांची का बौद्ध स्तूप)

टिप्पणी

है। शीर्ष पर जानवरों की आकृतियों वाले यह चमकदार खंभे, बहुत ही विशिष्ट और विलक्षण हैं। सारनाथ का खंभा जिसके शीर्ष पर शेर की आकृति है, भारत गणतंत्र के राष्ट्रीय चिह्न के रूप में स्वीकृत हुई है। हर खंभे का वजन 50 टन तथा उसकी ऊंचाई 50 फीट थी। सांची और सारनाथ के स्तूप मौर्यों की स्थापत्य-कला की उपलब्धि के प्रतीक हैं। सांची स्तूप के प्रवेश द्वार पर जातक-कथाओं का चित्रण उस समय के कलाकारों के सौंदर्यबोध और उनके कौशल का नमूना है।

यूनानी और भारतीय कला के मिश्रण से बाद में गंधर्व-कला विकसित हुई। दूसरी कलाएँ और स्थापत्य की शैली 'मथुरा-शैली' और 'अमरावती शैली' देशी थीं। कुषाण शासकों के प्रभाव में पहली सदी के बाद इन शैलियों के कलाकारों द्वारा बड़ी संख्या में बुद्ध की मूर्तियां बनाई गईं। गान्धार-कला विद्यालय के अंतर्गत बुद्ध की जीवन्त मूर्तियों में बोधिसत्त्व को यूनानी देवता के समान बनाया गया जबकि समस्त विचार, प्रेरणा तथा विषय भारतीय थे। उनके शारीरिक सौन्दर्य के लिए महंगे गहने, पोशाक का प्रयोग किया जाता था। सभी मूर्तियां पत्थर, टेराकोटा, सीमेंट जैसे पदार्थों से बनीं थी और कुछ मिट्टी की मूर्तियां भी बनी।

मथुरा शैली की आकृतियां धब्बेदार लाल पत्थर से बनाई गई थीं। उनमें आध्यत्मिकता झलकती थी। यहां हमें बुद्ध मूर्तियों के साथ जैन देवों की भी मूर्तियां देखने को मिलती हैं।

आंध्र के सातवाहन शासकों के संरक्षण में अमरावती स्कूल विकसित हुआ। गोदावरी के निचले भाग में एक विशाल स्तूप का निर्माण किया गया था। इस स्तूप के गोलाकार खंडों तथा दीवारों पर बहुत ही खूबसूरत नक्काशी की गई है। नागार्जुनकोंडा भी बौद्धों के स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध अन्य प्रमुख नगर है।

गुप्त-काल से ही बिना खंभों वाले हिन्दू मंदिरों का निमाण शुरू गया था। इसका एक उदाहरण देवगढ़ (झांसी जिला) का मंदिर है; जिसके बीच में गर्भ-गृह है जिसमें भगवान की मूर्ति स्थापित की गई है। एक और उदाहरण है–भर्तृगांव (कानपुर जिला)। यह दोनों मंदिर इस काल के बेहतरीन उदाहरण हैं।

गुफा स्थापत्य

भारतीय स्थापत्य के इतिहास में गुफा-स्थापत्य कला का विकास एक महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट चरण है। ई.पू. दूसरी सदी से दसवीं सदी ईसवी के बीच की हजारों गुफाएं खुदाई के दौरान मिली हैं। इनमें सबसे मशहूर महाराष्ट्र की 'अजंता तथा एलोरा' और उड़ीसा की 'उदयगिरि' गुफा है। इन गुफाओं में बौद्धों के विहार, चैत्य, मंडप तथा हिन्दू देवी-देवताओं के खंभों वाले मंदिर भी पाए गए हैं।

महाबलिपुरम में स्मारकों का समूह

चट्टानी पत्थरों के मंदिर

बड़ी-बड़ी चट्टानों को काटकर व तराशकर मंदिरों को निर्माण किया गया। खुदाई के दौरान प्रारंभिक पत्थरों के मंदिर पश्चिमी दक्कन में मिले हैं। ये मंदिर ईसवी-सन के प्रारंभ के हैं। कार्ले में अवस्थित 'चैत्य' पत्थरों को तराशकर बनाये जाने वाले स्थापत्य कला का असाधारण उदाहरण है। इस चैत्य में एक बहुत बड़ा सभाकक्ष है। तथा इसकी दीवारें नक्काशीयुक्त व चमकदार हैं। ऐलोरा का 'कैलाश मंदिर' तथा महाबलीपुरम् का 'रथ मंदिर' पत्थरों को तराशकर बनाए जाने वाले मंदिरों के दूसरे उदाहरण हैं। 'कैलाश मंदिर' का निर्माण राष्ट्रकूटों ने तथा 'रथ मंदिर' का निर्माण पल्लवों ने करवाया।

अनुमानत: पत्थरों के स्थायित्व एवं मजबूती ने कला के संरक्षकों तथा निर्माताओं को आकर्षित किया होगा इसीलिए उन्होंने इन मंदिरों को सुन्दर मूर्तियों से सजाया।

निरावलम्बित-मंदिर

मंदिरों का निर्माण कार्य गुप्तवंश के शासन काल में शुरू हुआ था। गुप्त वंश के राजाओं के शासन काल के बाद भी मंदिरों का निर्माण कार्य जारी रहा। दक्षिण भारत में पल्लव, चोल, पांड्य, होयसाल तथा बाद के काल में विजयनगर के शासक मंदिरों के बहुत बड़े

निर्माता रहे हैं। महाबलिपुरम् में 'तटीय मंदिर' का निर्माण पल्लव शासकों ने करवाया। पल्लवों ने दूसरे संरचनात्मक मंदिरों का भी निर्माण किया, जैसे कांचीपुरम् के 'कैलाशनाथ मंदिर' तथा 'वैकुंठ पेरूमल-मंदिर' आदि। चोलों ने बहुत सारे मंदिरों का निर्माण कराया। इनमें तंजौर का 'बृहदेश्वर मंदिर' बहुत प्रसिद्ध है। चोलों ने दक्षिण भारत में मंदिर स्थापत्य की एक दूसरी ही शैली विकसित की। इसे द्रविड़-शैली कहा गया। इस शैली में मंदिर में विमान या शिखर होता है। इसमें ऊंची-ऊंची दीवारें होती हैं तथा मंदिर के प्रवेश द्वार के ऊपर गोपुरम् होता है। बेलूर में बहुत ही भव्य और आकर्षक मंदिरों का निर्माण किया गया है और इनमें रत्नों का उत्कृष्ट प्रयोग अद्वितीय है।

उत्तर और पूर्वी भारत में भी सुन्दर, आकर्षक मंदिरों का निर्माण किया गया। इन मंदिरों का निर्माण नागर-शैली में किया गया है। इनमें से अधि कांश मंदिरों के छत सर्पिल होते हैं जिन्हें 'शिखर' कहा जाता है; मंदिरों की वेदी को 'गर्भ-गृह' कहा जाता है और खंभों की सहायता से बनाया गया 'सभाकक्ष' या 'मंडप' कहलाता है।

लालकिला

उड़ीसा में कुछ सुन्दर और आकर्षक मंदिर हैं। इनमें से एक लिंगराज का मंदिर है, जिसका निर्माण 'गंगा' शासकों ने करवाया। इसी तरह 'मुक्तेश्वर' का मंदिर भुवनेश्वर में तथा 'जगन्नाथ' का मंदिर पुरी में है।

कोणार्क के सूर्य मंदिर का निर्माण पूर्वी गंगा शासक नरसिंह देव प्रथम ने 13वीं शताब्दी में करवाया। यह मंदिर भगवान 'सूर्य' को समर्पित है। इस मंदिर का निर्माण बारह पहियों के रथ के आकार में किया गया है।

कंदरिया महादेव मंदिर, खजुराहों मंदिर

मध्य प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र में 'खजुराहो मंदिरों' का निर्माण चंदेल शासकों द्वारा 10वीं तथा 11वीं सदी के बीच में करवाया गया। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण मंदिर 'कंदरिया महादेव' का मंदिर है।

राजस्थान का माऊंट आबू क्षेत्र 'दिलवाडा-मंदिरों' के लिए जाना जाता है। 'दिलवाडा-मंदिर' जैन तीर्थंकरों को समर्पित हैं। ये मन्दिर बिल्कुल सफेद संगमरमर से बने हैं और विशिष्ट मूत्तियों से सुसज्जित हैं। इन मंदिरों का निर्माण 'सोलंकी' शासकों के संरक्षण में हुआ।

टिप्पणी

गुजरात का 'सोमनाथ मंदिर', बनारस का 'विश्वनाथ मंदिर', मथुरा का गोविन्द मंदिर, गुवाहटी का 'कामाख्या' मंदिर, कश्मीर का 'शंकराचार्य' मंदिर तथा कलकत्ता के कालीघाट का कालीमंदिर आदि दूसरे महत्त्वपूर्ण मंदिर हैं। ये मंदिर भारतीयों के मंदिर निर्माण-कार्य में सक्रिय रहने के प्रमाण हैं।

पाठगत प्रश्न 13.2

1. चन्द्रगुप्त मौर्य के महल का 'मैगस्थीनीज' ने कैसा वर्णन किया?

   .....

2. मौर्य स्थापत्य कला के प्रतिमान दो स्तूपों के नाम लिखें।

   .....

3. अशोक के शासनकाल में 'धम्म' के उपदेश कहां पर लिखे गए?

   .....

4. प्राचीन ऐतिहासिक काल के कुछ स्थापत्य कला के केन्द्रों के नाम बताइए।

   .....

5. उदयगिरि गुफाएं कहां हैं?

   .....

6. एलोरा में कैलाश मंदिर किसने बनवाया?

   .....

7. महाबलीपुरम् में 'रथ मंदिर' किसने बनवाया?

   .....

8. स्थापत्य कला में द्रविडशैली क्या है?

   .....

9. तंजोर में चोल राजा द्वारा बनवाये गये मंदिर का नाम लिखें।

   .....

10. स्थापत्य कला की 'नागर शैली' की परिभाषा लिखें।

    .....

11. कोणार्क में किसने सूर्यमंदिर बनवाया?

.....

12. राजस्थान के माऊंट आबू में प्रसिद्ध जैन मंदिर का नाम लिखिए।

.....

13.4 मध्यकालीन स्थापत्य कला

दिल्ली सल्तनत

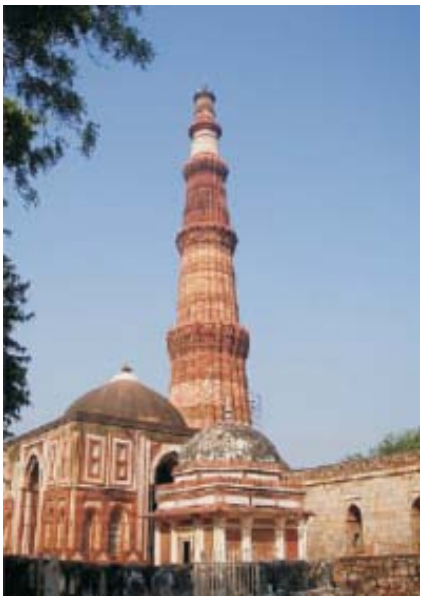

13वीं शताब्दी में तुर्कों के आगमन के साथ वास्तुकला में एक नई तकनीक का प्रवेश हुआ। फारस, अरब व मध्य एशिया की वास्तुशिल्प कला की शैलियों का भारत में पदार्पण हुआ। गुम्बज, मेहराब और मीनारें इन इमारतों के अभिन्न अंग थे। शासकों द्वारा बनाए गए महलों मस्जिदों और मकबरों में ये सभी लक्षण पाए जाते थे, लेकिन ये विशेषताएं देशी वास्तुकला के साथ घुलमिल गईं और वास्तुकला में एक नया संश्लेषण हुआ। यह इसलिए हुआ कि दिल्ली के तुर्की शासकों ने स्थानीय भारतीय शिल्पकारों की सेवाओं का प्रयोग किया जो बहुत कुशल थे और पहले ही बहुत सुन्दर भवन बना चुके थे। जो भवन बने उनमें इस्लामिक संरचना की सरलता और विस्तृत शिल्प या डिजाइन जो उन्होंने अपने देशी भवनों में बनाए थे, दोनों का संगम देखने को मिलता है। मुगल शासन के दौरान संश्लेषण की यह प्रक्रिया और अधिक परिष्कृत हुई और इसने महान ऊंचाइयों को प्राप्त किया।

दिल्ली की कुव्वतुल इस्लाम मस्जिद और कुतुबमीनार इस युग की प्राचीनतम इमारतें हैं। कुतुबमीनार की ऊंचाई सत्तर मीटर है। इस मीनार में पांच मंजिल हैं। मस्जिद और मीनार दोनों में खूबसूरती से अक्षर अंकित हैं। बाद में सुल्तानों द्वारा बहुत सी इमारतें बनवाई गईं।

अलाऊद्दीन खिलजी ने कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद को बड़ा करवाया तथा मस्जिद की चारदीवारी बनवा कर द्वार बनवाया। जिसे 'अल्हाई' दरवाजा कहते हैं। इसकी सुन्दर स्थापत्य कारीगरी आज भी देखने योग्य है। उन्होंने जलशक्ति से चालित हौज-खास दिल्ली में बनवाया। मौहम्मद तुगलक तथा फिरोज तुगलक के मकबरे और तुगलकाबाद के किले भी

टिप्पणी

कुछ उदाहरण हैं। यद्यपि इनके भवन बहुत सुंदर नहीं हैं परन्तु उनकी मजबूत और ऊँची-ऊँची दीवारें भी प्रभावित करती हैं। अफगान शासन के दौरान दिल्ली में इब्राहीम लोदी का मकबरा और सासाराम में शेरशाह सूरी का मकबरा बनाया गया। इस काल की स्थापत्य कला दर्शाती है कि किस तरह से निर्माताओं ने देशी शैलियों को अपनाया और इनका प्रयोग किया। इन वर्षों में तुर्की लोग भारत में बसने की प्रक्रिया में थे। इन शासकों को मंगोलों की ओर से खतरा था, जो उत्तरी दिशा से अचानक हमला कर देते थे। यही कारण है कि इस युग की इमारतें मजबूत, बुलंद और उपयोगी हैं।

क्षेत्रीय साम्राज्य

बंगाल, गुजरात और दक्कन में क्षेत्रीय राज्यों की स्थापना के साथ ही वहां की अपनी शैली में कई इमारतें बनाई गईं। अहमदाबाद की जामामस्जिद, सादी सैयद मस्जिद और झूलती मीनार इस वास्तुकला के कुछ उदाहरण हैं। मध्य भारत में मांडू में जामा मस्जिद, हिंडोला महल और जहाज महल बनाए गए। दक्कन में भी सुल्तान ने कई इमारतें बनवाईं। गुलबर्ग की जामा मस्जिद, बीदर का महमूद गवन का मदरसा, बीजापुर में इब्राहीम रोजा और गोल गुम्बज, गोलकुंड़ा का दुर्ग कुछ प्रसिद्ध इमारतों के उदाहरण हैं। गोल गुम्बज में विश्व का सबसे बड़ा गुंबद है। इन सभी इमारतों के डिजाइन और शैलियां उत्तर भारत की इमारतों की शैली से भिन्न हैं।

बंगाल में लंबे आकार के कुछ भवन और उनकी छतों का अदभुत शैली में निर्माण बंगाल प्रदेश के कुछ विशिष्ट लक्षण थे जैसे- अदीना मस्जिद और पाण्डुआ में जलालुद्दीन-का मकबरा, गौड़ में खील दरवाजा और तन्तीपारा मस्जिद, जौनपुर में, शारकु राजाओं ने अटाला मस्जिद के गुम्बद को भीमकाय, जालीदार दीवार से ढकवाया। जबकि, मालवा में होशांग शाह के मकबरे में पीले और काले रंग के संगमरमर पर कारीगरों से जड़ाऊ काम करवाया गया था। विजयनगर साम्राज्य, जो इस काल में स्थापित हुआ, के राजाओं ने भी अपने राज्यकाल में अनेक सुन्दर भवन और मन्दिर बनवाये और अन्य कई उपलब्धियों का श्रेय भी उनको जाता है। हम्पी में विट्ठलस्वामी मंदिर और हजर रमा मंदिर अच्छे मन्दिरों के उदाहरण है जिनके अब केवल अवशेष बचे हैं।

बहमनी

बहमनी सुलतानों ने फारसी, सीरिया, तुर्की तथा दक्षिण भारत के मंदिरों की शैलियों को अपनाया। गुलबर्ग में जामा मस्जिद बहुत प्रसिद्ध है। इस मस्जिद के प्रांगण को बहुत सारे गुम्बदों से ढका गया है जोकि भारत में ढके हुए प्रांगण वाली यह एकमात्र मस्जिद है।

मुगल

मुगलों के आगमन ने स्थापत्य कला में एक नए युग की शुरुआत की। विभिन्न शैलियों के संश्लेषण की जो शुरुआत पहले हो चुकी थी वह इस युग में अपनी पराकाष्ठा तक

पहुंच गई। मुगल शैली की वास्तुकला का प्रारंभ अकबर के शासन में हुआ। इस शासन की पहली इमारत दिल्ली में हुमायूं का मकबरा थी। इस शानदार इमारत में लाल पत्थर का इस्तेमाल किया गया। इसमें एक प्रमुखद्वार है और यह मकबरा एक बगीचे के बीचों-बीच बना है। कई विशेषज्ञ इसे ताजमहल का पुरोगामी मानते हैं। अकबर ने आगरा और फतेहपुर सीकरी में किलों का निर्माण कराया। बुलंद दरवाजा शक्तिशाली मुगल साम्राज्य की शानो-शौकत को प्रतिबिंबित करता है। इसका निर्माण अकबर की गुजरात विजय के बाद हुआ। बुलंद दरवाजे की मेहराब प्राय: 41 मी. ऊँची है और यह विश्व का सबसे शानदार द्वार है। सलीम चिश्ती का मकबरा, जोधाबाई का महल, इबादत खाना, बीरबल का आवास और फतेहपुर सीकरी के अन्य भवन भारतीय और फारसी शैलियों का संश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। जहांगीर के शासनकाल में आगरा के निकट सिकंदरा में अकबर का मकबरा बनवाया गया। उसने इत्मादुद्दौला का सुन्दर मकबरा बनवाया जो पूरी तरह संगमरमर का बना है। मुगलों में शाहजहां सबसे महान भवन निर्माता सिद्ध हुआ। उसने अपने निर्माणों में संगमरमर का भरपूर उपयोग किया। पच्चीकारी (पीएट्राड्यूरो) में खूबसूरत डिजाइन, सुंदर मेहराब और मीनार, उसकी इमारतों की विशेषताएं थीं। दिल्ली की जामा मस्जिद तथा लाल किला एवं आगरे का ताजमहल शाहजहां द्वारा बनाई गई कुछ प्रसिद्ध इमारतें हैं। शाहजहां की पत्नी की याद में बनाये गये मकबरे में जिसे ताजमहल कहा जाता है, मुगल काल में विकसित वास्तुकला की सारी विशेषताएं मौजूद हैं। इसमें एक केंद्रीय गुम्बद, चार शानदार मीनारें, द्वार, पच्चीकारी का काम और मुख्य भवन के चारों ओर बाग है। बाद के युग के भवनों पर मुगल शैली की वास्तुशिल्प का गहरा प्रभाव पड़ा। भवनों पर प्राचीन भारतीय शैली का भी प्रभाव पड़ा और उनमें आंगन और स्तम्भ बनवाए गए। स्थापत्य कला की इस शैली में पहली बार जीवित प्राणी, हाथी, शेर, मयूर तथा अन्य पक्षियों की भी मूर्तियाँ झरोखों में बनाई गईं।

फतेहपुर सीकरी में अकबर द्वारा बनवाए गए स्मारक

अकबर के शासनकाल से मुगल स्थापत्य कला का आरंभ हुआ। उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण भवनों का निर्माण करवाया। आगरा से 40 किलो मीटर दूर 'फतेहपुरसीकरी' को अपनी नई राजधानी बनाया, जो उनके शासन काल की महा उपलब्धि है। 'बुलंद दरवाजा' संसार में एकमात्र शानदार दरवाजा है। संत सलीम चिश्ती का मकबरा इसकी शान को बढ़ाता है। प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला का सुंदर नमूना जोधाबाई का महल है। फारसी शैली से प्रभावित होकर जामा मास्जद का निर्माण करवाया। अपनी अच्छी योजना व सुदर

टिप्पणी

सजावट के कारण 'दीवाने-आम' एवं 'दीवाने खास' प्रसिद्ध हैं। 'इबादत खाना' एवं पंचमहल भी विलक्षण भवन हैं। 'पंचमहल' पांच मंजिल वाला पिरामिड ढांचा है। इसका निर्माण बौद्ध बिहार के तरीके पर किया गया।

1526 ई. से मुगल स्थापत्य में मकबरों की इमारतें पूरी तरह से भिन्न प्रकार से बनने लगीं। इनके लिए अच्छे प्लेटफार्म बनवाये गए और इनके चारों ओर सुंदर बागों और सजावटी फव्वारों से सजावट की गई। इसका एक अति प्रसिद्ध उदाहरण है–फतेहपुर सीकरी की मस्जिद है जिसमें 3 गुम्बद हैं जिनकी 290 फीट चौडाई तथा 470 फीट की ऊंचाई है और वहां दो शाही मकबरे भी हैं।

सन् 1593 ई.–1613 ई. के दौरान बना अकबर का मकबरा सिकंदरा में दूसरा प्रसिद्ध मकबरा है। सन् 1630 ई. में शाहजहां ने 'ताजमहल' बनवाया जो आज भी 'संसार की आश्चर्यजनक इमारत' मानी जाती है। इसमें 18 फीट ऊंचे तथा 313 वर्ग फुट चौडा आयताकार संगमरमर का शाही चबूतरा बनवाया गया। इसके किनारों पर 133 फुट ऊंची मीनारें हैं। इसके मध्य 80 फुट ऊंचा और 58 फुट के घेरे का गुम्बद है। संगमरमर पर कम कीमती रत्न जेस्पर और अगाटे से जड़ाऊ काम किया गया है। यह जमुना किनारे पर बना है। यह मकबरा संगमरमर के झज्जों, फव्वारों और देवदार वृक्ष से घिरा हुआ है। मुगल साम्राज्य की शक्ति समाप्त होने से मुख्य स्थापत्य भी धीरे-धीरे नष्ट होने लगा।

मुगलकाल में मकबरों के चारों ओर सुंदर बगीचे, इमारतें, गुम्बद आदि बनाने की अद्भुत स्थापत्य कला विकसित हुई। जहांगीर और शाहजहां ने कश्मीर और लाहौर में शालीमार गार्डन का विकास किया। मुगलों ने भारत की संस्कृति और स्थापत्य कला को प्रोत्साहन दिया।

उसके बाद ब्रिटिश आए। इन्होंने भारतवर्ष पर 200 वर्षों तक शासन किया तथा ये अपने पीछे स्थापत्य कला में एक अलग तरह की औपनिवेशिक शैली छोड़ गए।

पाठगत प्रश्न 13.3

1. तुर्की शासकों की स्थापत्य कला शैली क्या थी?

   .....

2. दिल्ली सल्तनत शासनकाल में जो गुम्बद एवं मस्जिदों का निर्माण हुआ उनके नाम बताएँ।

   .....

3. संसार में सबसे बड़ा गुम्बद कौन सा है?

   .....

टिप्पणी

4. पैट्रा ड्यूरा (पच्चीकारी) क्या है?

.....

5. मुगल साम्राज्य की कौन सी इमारत उनकी शान का प्रतीक है?

.....

13.5 औपनिवेशिक स्थापत्य और आधुनिक काल

औपनिवेशिक प्रभाव को कार्यालयों के भवनों पर देखा जा सकता है। यूरोपीय लोगों का आगमन 16वीं सदी से होता है। इन्होंने बहुत सारे चर्चों और अन्य भवनों का निर्माण किया। पुर्तगालियों ने गोवा में बहुत सारे चर्चों का निर्माण किया। इन चर्चों में सबसे प्रसिद्ध है बेसिलिका बोन जीसस तथा 'संत फ्रांसिस का चर्च'। इसके बाद जब ब्रिटिश शासन भारत में हुआ तो उन्होंने रिहायशी और प्रशासनिक भवनों का निर्माण कराया। इन भवनों में साम्राज्य का गौरव झलकता है। स्तम्भों वाले भवनों में मिस्र और रोम का भी कुछ प्रभाव देखने को मिलता है। दिल्ली में संसद भवन और कनाट प्लेस इसके दो अच्छे उदाहरण हैं। वास्तुकार लुट्यन्स ने राष्ट्रपति भवन का नक्शा बनाया जो भूतपूर्व वायसराय का निवास था। यह लाल पत्थर से बना है और इसमें राजस्थान के जाली व छतरी जैसे डिजाइन हैं। ब्रिटिश भारत की भूतपूर्व राजधानी कलकत्ता में बना विक्टोरिया स्मारक संगमरमर की बहुत बड़ी इमारत है। यहां अब ब्रिटिशकाल की कलात्मक वस्तुओं का संग्रहालय है। 'राइटर्स बिल्डिंग' जहां ब्रिटिशकाल में सरकारी कर्मचारियों की कई पीढ़ियों ने काम किया, स्वतंत्रता के बाद अब वह बंगाल का प्रशासनिक केन्द्र है। कलकत्ता के चर्च जैसे सेंटपाल कैथेडरल में कुछ 'गाथिक' तत्व देखने को मिलते हैं। अंग्रेजों ने मुंबई में विक्टोरिया टर्मिनल जैसे कुछ खूबसूरत रेलवे टर्मिनल भी बनवाए। साक्ष्य के तौर पर 1947 ई. में आजादी के बाद भी तत्कालीन शैली के भवन देखने को मिलते हैं। फ्रांसीसी वास्तुकलाकार कोरबिजीयर ने चंडीगढ़ के भवन डिजाइन किए। दिल्ली में आस्ट्रिया के वास्तुकार स्टैन ने इंडिया इंटरनेशनल सेंटर का वास्तु डिजाइन किया, जहां विश्वभर से आये विचारकों और प्रबुद्ध वर्गों के सम्मेलन होते हैं और तात्कालिक इण्डिया हैबीटेट सैन्टर बनवाया जो राजधानी में बौद्धिक गतिविधियों का केन्द्र है।

पिछले कुछ दशकों में बहुत से भारतीय वास्तुकार हुए जो वास्तु शिल्प के उत्कृष्ट संस्थानों जैसे दिल्ली के 'स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्केटेक्चर' से प्रशिक्षित हुए हैं। राज रैवल और चार्ल्स कोरेया जैसे वास्तुकार देश की नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं। राज रैवेल ने स्कोप कॉम्पलैक्स और दिल्ली के जवाहर व्यापार भवन का नक्शा डिजाइन किया है। वे देशी भवन सामग्रियों जैसे बलुआ पत्थर का उपयोग करते हैं और इसमें वे गर्व का अनुभव करते हैं। उन्होंने रोम की प्लाजाओं में बनाई गई खुली जगहों और सीढ़ियों का उपयोग अपने वास्तु डिजाइनों में किया। इसका उदाहरण दिल्ली में निर्मित सीआईईटी भवन है। मुंबई के चार्ल्स कोरिया, दिल्ली के कनाट प्लेस में जीवन बीमा योजना भवन के निर्माण के लिए जाने जाते हैं। ऊँचे-ऊँचे भवनों में उसने शीशे के रोशनदानों का प्रयोग किया जिससे प्रकाश आता रहे और ऊँचाई का आभास भी होता रहे।

घरेलू स्थापत्य में पिछले दशक में सभी महानगरों में गृह निर्माण सहकारिता संस्थाएं फैल गई हैं जिन्होंने बेहतरीन योजना के साथ उपयोगिता और सौन्दर्यबोध का मिश्रण किया है।

पाठगत प्रश्न 13.4

1. पुर्तगालियों ने गोवा में कौन से प्रसिद्ध गिरजाघरों का निर्माण किया?

   .....

2. राष्ट्रपति भवन का नक्शा बनाने वाले वास्तुशिल्पी का नाम लिखिए।

   .....

3. भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत कौन सी वास्तुशैली से बने भवनों का निर्माण किया गया?

   .....

4. उस समय के कलकत्ता के विक्टोरिया स्मारक भवन में अब क्या स्थित है?

   .....

5. चंडीगढ़ शहर का नक्शा किसने बनाया?

   .....

6. दिल्ली में इंडिया इंटरनेशनल सेंटर का वास्तु डिजाइन किस वास्तुशिल्पकार ने किया?

   .....

7. आधुनिक भारत के कुछ प्रसिद्ध वास्तुशिल्पियों के नाम लिखें।

   .....

13.6 भारत में कस्बे और शहर

आपने इस अध्याय में भारत में प्राचीन, मध्य और आधुनिक काल की वास्तुकला के विषय में पढ़ा है। पिछले खण्ड में आपने दिल्ली में योजना और वास्तुकला के स्कूल के विषय में भी पढ़ा। आप देख सकते हैं कि योजना का संबंध स्थापत्य कला से है। क्या आप जानते हैं कि योजना वस्तुत: कस्बों की योजना है जो शहरी विकास से जुड़ी है। यह स्पष्ट है कि जब हम वास्तुकला के बारे में सोचते हैं या बात करते हैं तो हमें इससे जुड़े कस्बों की योजना या शहरी विकास के बारे में भी सोचना होगा। इस खण्ड में हम भारत में कस्बों की और शहरों की योजना के विषय में जानेंगे। यह भी एक बहुत रोचक कहानी है। हम कुछ समय वर्तमान भारत के चार प्रमुख शहरों चेन्नई, मुंबई, कोलकाता और दिल्ली के विस्तार के विषय में चर्चा करने में बिताएंगे। हम इन शहरों के मूल रूपों को रेखांकित करेंगे और इनके महत्त्वपूर्ण संरचनाओं और भवनों के विषय में जानेंगे।

टिप्पणी

भारतीय स्थापत्य कला

आपको यह जानवर आश्चर्य होगा कि हड़प्पन सभ्यता जिसे कुछ इतिहासकारों द्वारा सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहा जाता है, से प्रारंभ करके भारत में नगर योजना का एक बहुत लम्बा इतिहास रहा है जिसे ई.पू. 2350 ईसवी तक भी खोजा जा सकता है। जैसा कि आप पहले पढ़ चुके हैं कि हड़प्पा और मोहनजोदाड़ो इन दो नगरों में व्यापक प्रणाली व्यवस्था थी, सड़कें थीं जो एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं, एक किला था जो ऊंची जमीन पर बना था और निचले हिस्सों में शेष जनसंख्या रहा करती थी। राजस्थान में कालीबंगा तथा कच्छ में सुर्खोदा में भी इसी प्रकार का नगरीय ढांचा था। ईसा पूर्व 600 शताब्दी से आगे हमें ऐसे कस्बे और शहर मिलते हैं जो दोनों आर्य और द्रविड़ सभ्यताओं से जुड़े हुए हैं। ये हैं राजगिरि, वाराणसी, अयोध्या, हस्तिनापुर, उज्जैन, श्रावस्ती, कपिलवस्तु और कौशाम्बी एवं कई अन्य। हम मौर्य युग में भी कई कस्बों को देखते हैं जिन्हें जनपद (छोटे कस्बे) और महाजनपद (बड़े कस्बे) कहा जाता था।

भारत में मुस्लिमों के आने पर दृश्य परिवर्तित हो गया। कस्बों पर इस्लामी प्रभाव दिखाई देने लगा। मस्जिदें, किले, महल अब शहरों में दिखाई देने लगे। अबुल फजल के अनुसार 1594 ई. पश्चात् प्राय: 2387 कस्बे थे। मुख्यतया इसलिए क्योंकि कई बड़े गांव छोटे शहरों में बदल गये जिन्हें कस्बा कहा जाने लगा। इन कस्बों में शीघ्र ही स्थानीय कलाकार और शिल्पकार रहने लगे जिन्होंने अपने चुने हुए शिल्प में विशेषता प्राप्त करनी प्रारंभ कर दी जैसे आगरे में चमड़े का काम और संगमरमर का काम। सिंध सूती कपड़ों और सिल्क के लिए माना जाने लगा, गुजरात जरी और रेशम के धागों और उनसे बने ब्रोकेट के निर्माण में प्रसिद्ध हो गया जो अन्य देशों को भी भेजा जाता था।

जैसा कि आप जानते हैं, बाद में 16वीं शताब्दी में भारत में अंग्रेज समुद्री रास्तों से आए और नई बंदरगाहों की स्थापना का प्रारम्भ हुआ जैसे गोआ में पणजी, (1510 ई.), महाराष्ट्र में मुंबई (1532 ई.), मछलीपट्टनम् (1605 ई.), नागपट्टनम्, (1658 ई.), दक्षिण में मद्रास (1639 ई.) और पूर्व में कोलकाता (1690 ई.)। ये नई बंदरगाहें अंग्रेजों द्वारा बनाई गईं क्योंकि इस समय इंग्लैंड विश्व का अग्रणी औद्योगिक अर्थव्यवस्था क्षेत्र के रूप में विकसित हो चुका था। भारत ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चा माल निर्यात करता था और इनके बने सामान का समृद्ध प्रमुख खरीददार भी था। 1853 ई. के बाद अंग्रेजों द्वारा रेलवे लाइनें भी बिछाई गईं जिससे सामान को अंतरंग भागों से बंदरगाहों तक लाया जा सके या उन क्षेत्रों से संबंध जोड़ा जा सके जो कच्चा माल देते थे या बना हुआ माल लेते थे। 1905 ई. तक प्राय: 28000 मील लंबी रेलवे लाइनें अंग्रेजों के आर्थिक, राजनैतिक और सैनिक हितों की पूर्ति करती थीं। डाक और तार की लाइनें भी बिछाई गईं जो संप्रेषण कार्य के लिए आवश्यक थीं।

20 वीं शताब्दी के प्रारंभ तक बोम्बे (मुम्बई), कलकत्ता (कोलकाता) और मद्रास (चेन्नई) प्रशासन, व्यापार और उद्योगों के जाने माने महत्वपूर्ण नगरों के रूप में प्रसिद्ध हो गए। कुछ स्थान जैसे कोलकाता में डलहौजी स्कवेयर, फोर्ट स्ट्रीट जार्ज (मद्रास), कनॉट प्लेस (दिल्ली) और समुद्री तट जैसे मुम्बई में मेरीन ड्राइव, आदि अंग्रेजों को उनके निवास

टिप्पणी

इंग्लैण्ड की याद दिलाते थे। लेकिन वे यूरोप के समान अपने वातावरण में ठंडक भी चाहते थे। अत: इन शहरों के पास पहाड़ों पर भारत की तेज गर्मी से बचने के लिए नये हिल स्टेशन बनाए गए जैसे मसूरी, शिमला और नैनीताल उत्तर में, पूर्व में दार्जिलिंग और शिलांग, और दक्षिण में नीलगिरि और कोडईकनाल।

शहरों में नये आवासीय क्षेत्र भी विकसित होने लगे। जिस क्षेत्र में नागरिक प्रशासन के अधिकारी रहते थे वह क्षेत्र सिविल लाइन्स कहलाया, जबकि छावनी आदि क्षेत्रों में ब्रिटिश आर्मी के अफसर रहा करते थे। क्या आप जानते हैं कि यह दो क्षेत्र अभी भी प्रशासन और सेना के अधिकारियों के उच्च वर्ग के लिए ही पहले की भांति आरक्षित हैं।

अब हम भारत के चार प्रमुख महानगर चेन्नई, कोलकाता, मुम्बई और दिल्ली के बारे में पढ़ेंगे। नि:संदेह आप इनसे परिचित ही हैं।

पाठगत प्रश्न 13.5

1. भारत में प्राचीन काल में विकसित 5 शहरों के नाम लिखिए–

   (i) ....., (ii) ....., (iii) ....., (iv) ....., (v) .....

2. उन पांच स्थानों के नाम लिखिए जहाँ अंग्रेजों ने बंदरगाहें बनाईं–

   (i) ....., (ii) ....., (iii) ....., (iv) ....., (v) .....

3. अंग्रेजों द्वारा निर्मित 4 पर्वतीय स्थानों के नाम लिखिए–

   (i) ....., (ii) ....., (iii) ....., (iv) ....., (v) .....

4. सिविल लाइन्स में कौन रहते थे?

   .....

5. छावनी क्या हुआ करती थी?

   .....

13.6.1 चेन्नई

चेन्नई जिसे पहले मद्रास कहा जाता था, अब तमिलनाडु प्रदेश की राजधानी है और भारत के चार महानगरों में से एक है। यह शहर सेंटजॉर्ज किले के चारों ओर विकसित हुआ और धीरे-धीरे पास के कस्बों और गांवों को घेरता चला गया। 19वीं शताब्दी में यह शहर ब्रिटिश इम्पीरियल इण्डिया की दक्षिणी विभाग की मद्रास प्रेसीडेन्सी का केंद्र बना। 1947

टिप्पणी

में भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् यह शहर मद्रास स्टेट की राजधानी बना। मद्रास राज्य का नाम 1968 ई. में तमिलनाडु रख दिया गया। इस शहर ने अपनी पारंपरिक तमिल हिन्दु सभ्यता को बरकरार रखा और विदेशी समाज और भारतीय संस्कृति का विचित्र सम्मिश्रण प्रदर्शित करता है। चेन्नई पर ब्रिटिश प्रभाव इसके विभिन्न चर्चों, भवनों और दोनों ओर वृक्षों की पंक्ति से घिरे चौड़े-चौड़े मार्गों में स्पष्ट झलकता है।

उच्च न्यायालय भवन: 1892 ई. में बना यह भवन विश्व में लण्दन के न्यायालयों के बाद विशालतम न्यायालय भवन है। किले सेट जार्ज का प्रमुख हाल, इसके अलंकृत गुम्बद और गलियारे नई स्थापत्य शैली के प्रतीक हैं।

आइस हाउस (बर्फ खाना): इसमें अंग्रेजों के शासन में उत्तरी अमेरिका की विशाल झीलों से बड़े-बड़े बर्फ के टुकड़े जो पानी के जहाजों में शीतलीकरण के उद्देश्य से लाए जाते थे, बर्फखानों में सुरक्षित रखा जाता था।

दूसरी खूबसूरत इमारत जो इस समय में निर्मित हुई वह है सेंटजोन्स का चर्च जिसमें चौड़े-चौड़े गोथिक मेहराब बने हैं और खूबसूरत धब्बेदार शीशे की खिड़कियाँ हैं। इसमें एक भेव और मंच है, एक मीनार और एक शिखर है। दीवारें छोटे अनगढे पत्थरों की बनी हैं, अपरिष्कृत बादामी रंग के कुर्ला पत्थरों का रूप लिये हुए हैं, जबकि मंच, मेहराव और पलस्टर पोरबंदर पत्थर का है और छत सागवान की लकड़ी की है और फर्श इंग्लैण्ड से मंगाई गई टाइलों का बना है।

एक अन्य भवन जो इस काल में निर्मित हुआ है, वह है जनरल पोस्ट ऑफिस जो 1872 ई. में पूर्ण हुआ। चेन्नई के जनरल पोस्ट ऑफिस में एक बहुत बड़ा भवन है जिसपर एक ऊँचा गुम्बद बना है। यह स्थानीय असिताश्य पत्थर का बना है जिस पर कुर्ला के पीले पत्थर और ध्रंगाद्र के सफेद पत्थर मिला कर कारीगरी की गई है। यह पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। इसके अंदर संगमरमर की शीट वाली मेजें, ऊँची-ऊँची छतें, झूलती हुई सीढ़ियाँ अंग्रेजों की शक्ति और धन का भरपूर प्रदर्शन करती है।

13.6.2 कोलकाता

कोलकाता के मूल और इतिहास की खोज बहुत रोचक है। क्या आप जानते हैं कि अंग्रेजों के राज्य में 1911 ई. तक यह ब्रिटिश भारत की राजधानी था। यह 1686 ई. में कलकत्ता के नाम से जाना गया। ऐसा अंग्रेजों की विस्तार योजना के परिणाम स्वरूप हुआ।

यह शहर 1756 ई. तक निरंतर उन्नति करता रहा जब तक सिराजुद्दौला (बंगाल के नवाब) ने 1757 ई. में आक्रमण करके अंग्रेजों को शहर से भगा नहीं दिया। इससे अगले वर्ष 1757 ई. में प्लासी का युद्ध हुआ जिसमें रॉबर्ट क्लाइव ने नवाब को हराकर फिर से शहर पर कब्जा कर लिया।

1774 ई. में कलकत्ता में सर्वोच्च न्यायालय के स्थापित होने के बाद यह न्याय का स्थान बन गया। ब्रिटिश भारत की राजधानी 1911 ई. में कलकत्ता से नई दिल्ली बना दी गई। आपको यह ज्ञात ही होगा कि कलकत्ता सरकारी तौर पर 2001 ई. में कोलकाता कहलाने लगा। आइए अब हम एक दृष्टि कलकत्ता के उन भवनों और प्रसद्धि इमारतों पर डालें जो आज भी विद्यमान है।

हावड़ा पुल हुगली नदी पर बना है। यह पुल हावड़ा शहर को कलकत्ते से जोड़ता है। यह पुल दो 270 फीट ऊँचे स्तम्भों पर खड़ा है इसमें पेच और कब्जे आदि नहीं लगे हैं और यह पुल कलकत्ता की महत्त्वपूर्ण निशानी है। यह विश्व का सबसे अधिक व्यस्त पुल है।

उत्तरी कलकत्ता में स्थित मार्बल पैलेस 1835 ई. में बना। यहाँ आज उत्कृष्ट कला संग्रहालय बना हुआ है। यहाँ कला के उत्कृष्ट नमूने, शिल्प, चित्र और तैलचित्र प्रदर्शित किए गए हैं। इसमें एक चिड़ियाघर भी है जहाँ आप विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी देख सकते हैं। वस्तुत: यहाँ पक्षियों का संग्रह बेजोड़ है।

फोर्ट विलियम हुगली नदी पर स्थित है। यह अंग्रेजों द्वारा विशेषत: राबर्ट क्लाइव

द्वारा 1696 ई. में प्रारंभ किया गया और 1780 ई. में जाकर पूरा हुआ। इस किले का मुख्य उद्देश्य आक्रमणकारियों से बचाव करना था। किले के चारों ओर का क्षेत्र साफ करके मैदान बना दिया गया। अब यहाँ कई प्रदर्शनियाँ और मेले लगते रहते हैं।

विक्टोरिया मेमोरियल हॉल कलकत्ता का अति समृद्ध संग्रहालय है जो 1921 ई. में स्थापित हुआ। यह एक शानदार स्थल है जो पर्यटक को विगत इतिहास की दुनिया में ले जाता है। आज विक्टोरिया मेमोरिलय कलकत्ता का सबसे खूबसूरत कला संग्रहालय है। यह 184 फुट ऊँचा महल है जो 64 एकड़ भूमि पर बनाया गया है।

क्या आप जानते हैं कि ईडन गार्डन क्रिकेट क्लब कलकत्ता में 1864 ई. वर्ष में स्थापित हुआ है। आज इसमें 1,20,000 लोगों के बैठने का स्थान है। 'ईडन गार्डन ऑफ कोलकाता' निश्चित ही अवश्य देखने योग्य स्थानों में से एक है।

लेखकों का भवन (Writers' Building) 1690 ई. में बनना प्रारंभ हुआ। इसका यह नाम इसलिए पड़ा क्योंकि यह स्थान ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कनिष्ठ लेखकों के निवास के लिए उपयोग किया जाता था। यह गॉथिक भवन लेफ्टिनेंट गवर्नर एशले ईडन (1877 ई.) के कार्यकाल में बना।

13.6.3 मुम्बई

आप जानते ही हैं कि मुम्बई भारत के पश्चिमी तट पर अरब सागर के किनारे बसी हुई है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि कभी यह सात द्वीपों का समूह थी। यद्यपि इस स्थल पर प्रागैतिहासिक समय से ही लोग बस रहे थे, परंतु मुम्बई शहर 17वीं शताब्दी में अंग्रेजों के आने से ही अपनी आज की स्थिति में आया। वस्तुतः यह 19वीं शताब्दी में अपने पूरे रूप में आ पाया। यह पहला शहर था जहाँ रेलवे बनी। कलकत्ता के साथ यह भी उन दो शहरों में से हैं जहाँ समाचार पत्र निकलने प्रारंभ हुए।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बहुत से नागरिक और सरकारी भवन मुम्बई में विक्टोरिया गोथिक शैली में बनने प्रारंभ हुए, उदाहरणतया सचिवालय (1874 ई.), काउन्सिल हाल

(1876 ई.), एल्फिन्स्टन कालेज (1890 ई.)। पर सबसे भव्य शैली में 1867 ई. में विशाल रेलवे स्टेशन विक्टोरिया टर्मिनल (वर्तमान छत्रपति शिवाजी टर्मिनल) बनाया गया। यह एक चर्च प्रतीत होता है न कि रेलवे स्टेशन। इसमें खुदाई किए गए पत्थरों की चित्रवल्लरी, धब्बेदार शीशे की खिड़कियाँ और हवाई दीवारें हैं।

प्रसिद्ध 'गेटवे ऑफ इण्डिया', किंगजार्ज पञ्चम और क्वीन मेरी के भारत आने के स्वागत में, पीले पत्थर से स्थापत्य की इण्डो सारासिनिक शैली में बनवाया गया। यह 1924 ई. में बनकर तैयार हुआ और इसमें 24 लाख रुपये व्यय हुआ जो उस समय में एक बड़ी रकम मानी जाती थी। इसमें 26 मीटर ऊँची मेहराब, चार बड़े कंगूरे और महीन जालीदार काम पीले असिताश्म पत्थर पर बनाया गया है।

स्वतंत्रता के बाद, मुम्बई भारत की अग्रणी व्यापारिक और औद्योगिक नगरी बन गई है। स्टॉक एक्सचेंज, व्यापार केंद्र, प्रसिद्ध फिल्म उद्योग जिसे बॉलीवुड कहा जाता है और वह जिसका आप पाश्चात्यकरण और आधुनिकीरण के रूप में नाम ले सकते हैं, वह सब यहाँ है। जैसा कि आप जानते हैं कि आज यह भारत का सबसे महत्त्वपूर्ण वित्तीय नगर है जिसमें अनेक उद्योग चल रहे हैं जैसे कपड़ा उद्योग, वित्त और फिल्म निर्माण आदि। बॉलीवुड विश्व में सबसे बड़ा फिल्म उद्योग है जहाँ अनेकों हिंदी फिल्म बनाई जाती हैं। गेटवे ऑफ इण्डिया के कारण मुम्बई में अँग्रेजी राज्य के निशान आज भी यहाँ स्पष्ट दिखाई देते हैं।

पाठगत प्रश्न 13.6

1. चेन्नई के चार प्रसिद्ध स्थानों के नाम लिखिए।

   (i) ....., (ii) ....., (iii) ....., (iv) .....

2. कोलकात्ता के चार प्रसिद्ध स्थानों के नाम लिखिए।

   (i) ....., (ii) ....., (iii) ....., (iv) .....

3. मुम्बई के चार प्रसिद्ध स्थानों के नाम लिखिए।

   (i) ....., (ii) ....., (iii) ....., (iv) .....

13.6.4 दिल्ली

क्या आप जानते हैं कि सन् 1911 में दिल्ली ब्रिटिश इण्डिया की राजधानी बनी। इसिलिए

टिप्पणी

भारतीय स्थापत्य कला

दिल्ली ने 2011 ई. में अपनी 100वीं जयन्ती मनाई। स्पष्ट ही है कि 1911 ई. में वह आधुनिक नगर बसा जिसे नई दिल्ली कहतें हैं। तथापि दिल्ली का इतिहास तो इससे भी पुराना है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि सात महत्त्वपूर्ण नगरों को मिला कर दिल्ली नगरी बनी। पहली दिल्ली यमुना के दायें किनारे पर युधिष्ठिर द्वारा जो पाण्डवों में सबसे बड़े थे, इन्द्रप्रस्थ के नाम से बसाई गई। निश्चय ही आपको महाभारत की कहानी तो याद ही होगी जिसमें पाण्डव और कौरवों की कहानी है। लोककथाओं के आधार पर दिल्ली राजा ढिल्लु द्वारा ई. पश्चात् द्वितीय शताब्दी में बसाई गई। पालेमी, भूगोलज्ञ, ने नक्शे में दिल्ली को दाइदल के नाम से दिखाया।

लेकिन इससे भी बहुत समय पहले असंख्य हड़प्पा के स्थानों में दिल्ली नामक शहर ही दिखाया गया है। इसका प्रमाण आपको दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में मिल सकता है। उस समय से दिल्ली बढ़ती गई। आज यह इतनी बढ़ चुकी है कि यह न केवल अपने देश में बल्कि पूरे विश्व के बड़े-बड़े शहरों में से एक है।

दिल्ली के साथ भी एक दिलचस्प कहानी जुड़ी हुई है। कहानी इस प्रकार है- राजा अशोक के जमाने में कुतुब मीनार परिसर में लौह स्तम्भ के नीचे एक सांप वासुकि को जमीन के भीतर ध केल दिया गया था। कुछ वर्षों बाद जब दिल्ली में लाल कोट के भीतर राजा अनंग पाल ने अपना राज्य स्थापित किया, तब उसने इस स्तम्भ को ऊपर खींच लिया और वासुकि को मुक्ति दिलवाई। उसी समय भविष्यवाणी की गई कि कोई भी वंश अब दिल्ली पर अधि क देर तक शासन नहीं कर पायेगा। तोमर वंश के बाद चौहान आए जिन्होंने महरौली के पास लाल कोट क्षेत्र में किला राय पिथौरा के नाम से एक नगर बसाया। पृथ्वी राज चौहान महरौली से ही शासन करते थे।

दिल्ली फिर सुर्खियों में आई जब गुलाम वंश का शासन प्रारंभ हुआ। आपको याद होगा कि कुतुबुद्दीन ऐबक ने प्रसिद्ध कुतुब मीनार बनवानी शुरू की जिसे बाद में इल्तुत्मिश ने पूरा करवाया।

बाद में अलाउद्दीन खिलजी सुलतान बने, तब सीरी शक्ति का केन्द्र बनी। सीरी किला आज भी विद्यमान है और यह क्षेत्र दिल्ली में शाहपुर जाट नाम से प्रसिद्ध है। सीरी की भी एक दिलचस्प

कहानी है। अलाउद्दीन खिलजी का शासन निरन्तर मंगोल आक्रमणकारियों द्वारा त्रस्त रहता था। कुछ मंगोल जो शहर में रह गये, वे विद्रोही बन गए। अलाउद्दीन खिलजी ने उनके सिर कटवा दिए और शहर की दीवारों के नीचे दबवा दिए। इससे यह स्थान सिरी कहलाने लगा। सिर शब्द आप जानते ही हैं, आज भी शरीर के ऊपरी भाग को सिर ही कहा जाता है।

कुछ वर्षों बाद, जब तुगलक वंश गद्दी पर बैठा, सुलतान गियासुद्दीन तुगलक ने तुगलकाबाद नामक शहर बसाया। यह एक किले के समान बनाया गया शहर था। गियासुद्दीन की मृत्यु के बाद मोहम्मद बिन तुगलक (1320 ई. - 1388 ई.) ने दिल्ली के पुराने नगरों को एकत्रित करके एक नया शहर बनवाया जिसका नाम रखा गया- जहाँपनाह।

इब्न बतूता ने, जो मुहम्मद बिन तुगलक के दरबार में रहता था, इस नगर का बहुत रोचक वर्णन किया है। वह वर्णन करता है- "भारत का एक महानगर, एक विस्तृत और शानदार नगर है जिसमें सौन्दर्य और शक्ति दोनों एक हो गई हैं। यह एक चारदिवारी से घिरा है जिसकी दुनिया में दूसरी मिसाल नहीं है और यह भारत का सबसे बड़ा नगर है; शायद पूरे मुस्लिम साम्राज्य में"।

तुगलक वंश का एक और महत्त्वपूर्ण शासक था फीरोज शाह तुगलक। उसके राज्य में दिल्ली की जनसंख्या बहुत बढ़ गई थी और इसका विस्तार भी बढ़ चुका था। उसने फिरोजाबाद बनाया जो फिरोजशाह कोटला के समीप ही स्थित है। फिर भी 1398 ई. में समरकन्द के शहंशाह तैमूर के आक्रमण ने इसकी शानोशौकत को नष्ट कर दिया, साथ ही जहांपनाह शहर को भी। तैमूर अपने साथ भारतीय वास्तुकारों और मजदूरों को समरकन्द में मस्जिदें बनवानें के लिए अपने साथ ले गया। बाद के शासकों ने आगरा को राजधानी बनाया।

मुगल शासक हुमायुँ ने प्राचीन इन्द्रप्रस्थ के खण्डहरों पर 'दीनेपनाह' बनाया। लेकिन हुमायुँ के पोते शाहजहाँ ने दिल्ली की शान को फिर से जीवित कर दिया। उसने 1639 ई. में लाल किला बनवाना शुरू किया और 1648 ई. में पूरा किया। 1650 ई. में उसने प्रसिद्ध जामामस्जिद बनवानी प्रारंभ की। शाहजहाँ का नगर शाहजहानाबाद कहलाया। बड़े बड़े शायर जैसे दर्द, मीर तकी, मिर्जा गालिब ने गजलें लिखी और गजलों की भाषा उर्दु इस समय की प्रसिद्ध भाषा हो गई। ऐसा माना जाता है कि शाहजहांबाद ईराक के बगदाद से भी ज्यादा खूबसूरत था और तुर्की के कुस्तुन्तुनिया से भी अधिक शानदार। शताब्दियों के बाद नादिरशाह 1939 ई. की सेनाओं ने तथा अहमद शाह अब्दाली (1748 ई.) ने और अन्दर से लगातार आक्रमणों ने इस शहर को लूट कर बर्बाद कर दिया। इससे शहर

टिप्पणी

कमजोर पड़ गया। लेकिन इन सभी समस्याओं के बावजूद दिल्ली में अभी भी बहुत कुछ देने को था- संगीत, नृत्य, नाटक और लजीज खाने, साथ ही एक समृद्ध सांस्कृतिक भाषा और साहित्य।

कहते हैं कि दिल्ली कम से कम 24 सूफियों का घर थी जिनमें से अधिक प्रसिद्ध सूफी जहांपनाह क्षेत्र से ही थे। उनमें से कुछ थे-

1. कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी जिनकी खानकाह या डेरा मेहरौली में था।
2. निजामुद्दीन औलिया जिसका डेरा निजामुद्दीन में था।
3. शेख नसीरूद्दीन महमूद जो लोगों मे चिरागे दिल्ली के नाम से प्रसिद्ध थे।
4. अमीर खुसरो जो एक महान कवि, जादूगर और विद्वान था।

1707 ई. के बाद मुगल शासन कमजोर पड़ गया और दिल्ली भी अपनी धुंधली छाया मात्र रह गई। 1803 ई. में अंग्रेजो ने मराठों को हरा कर दिल्ली पर कब्जा कर लिया। कश्मीरी गेट और सिविल लाइन्स के पास के क्षेत्र महत्त्वपूर्ण केन्द्र बन गए जहाँ अंग्रजों ने कई ईमारतें बनवाई। 1911 ई. में अंग्रेजों ने अपनी राजधानी दिल्ली को बनाया और एक नया शहर 'नई दिल्ली' बसाया। यह बहुत शानदार ढंग से बनाया गया था। इण्डिया गेट, वायसराय हाउस जो अब राष्ट्रपति भवन है, संसद भवन, उत्तरी और दक्षिणी ब्लाक जैसी सभी विशाल संरचनाएँ ब्रिटिश राज्य में भारतीय प्रजा पर रौब जमाने के लिए बनवाए गए। इनसे ब्रिटिश साम्राज्य की सर्वोच्चता, शाही शानोशौकत और भव्यता का प्रदर्शन होता था। यह शहर 1932 ई. तक बन कर तैयार हुआ। कनाट प्लेस आज भी शहर का प्रमुख व्यापारिक केन्द्र है। दिल्ली आज भी भारत का महत्त्वपूर्ण व्यापारिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक केन्द्र है। बड़ी बड़ी भव्य इमारतें, सुन्दर उद्यान, पुल, मेट्रो, खूबसूरत हवाई अड्डा, शिक्षा केन्द्र, संग्रहालय, थोक की मण्डियाँ, राजदूतों के निवास, और विश्व में सभी देशों के उच्च आयुक्त, बड़े बड़े मॉल, प्रमुख उद्योग आदि सभी इसको एक शानदार शहर सिद्ध करतें हैं। कहा जाता है दिल्ली है दिलवालों की। (दिल्ली उनकी है जिनके दिल बड़े हैं)।

पाठगत प्रश्न 13.7

1. दिल्ली के अन्दर के शहरों का उनके बनाने वाले राजाओं के साथ मिलान कीजिए

	शहर	*राजा जिन्होंने बनाया*
1.	इन्द्रप्रस्थ	पृथ्वी राज चौहान
2.	लालकोट	मुहम्मद बिन तुगलक
3.	मेहरौली	युधिष्ठिर

4.	सीरी	फीरोज शाह तुगलक
5.	जहाँपनाह	हुमायुँ
6.	तुगलकाबाद	शाहजहाँ
7.	फिरोजाबाद	अलाउद्दीन खिलजी
8.	दीने पनाह	अनंगपाल तोमर
9.	शाहजहाँनाबाद	गियासुद्दीन तुगलक

2. जहाँपनाह क्षेत्र के चार सूफी सन्तों के नाम लिखिए।

(i) ....., (ii) ....., (iii) ....., (iv) .....

आपने क्या सीखा

- भारतीय स्थापत्य कला और मूर्तिकला का इतिहास उतना ही पुराना है, जितनी पुरानी सिन्धु घाटी सभ्यता है।
- स्थापत्य कला भारतीय संस्कृति की विविधता को समझाने की कुंजी है क्योंकि यह विभिन्न कालों में विभिन्न संस्कृतियों तथा विभिन्न धर्मों से प्रभावित हुई है।
- प्रारंभिक भारतीय स्थापत्य-शैली के विकास में स्तूपों, विहारों तथा चैत्यों का निर्माण करके बौद्ध और जैन धर्मों ने योगदान दिया।
- गुप्त, पल्लव तथा चोल के काल में मंदिर-स्थापत्य कला विकसित हुई।
- दिल्ली के सुल्तान और मुगल अपने साथ फारसी स्थापत्य के प्रभाव को लेकर आए और इसलिए हम भारत-फारसी शैली की स्थापत्य कला को देख पाते हैं।
- ब्रिटिश और दूसरी औपनिवेशिक सत्ता ने भारतीय स्थापत्य को प्रभावित किया और देशी शैलियों के साथ उनके संश्लेषण पर बल दिया। उन्होंने एकदम अलग औपनिवेशिक स्थापत्य शैली का प्रयोग किया जिसमें शानदार भवन और कार्यालयों के निर्माण में स्थानीय पदार्थों का प्रयोग किया जाता था।
- हडप्पा सभ्यता से प्रारम्भ करके भारत में नगर योजना का इतिहास 2350 ई.पू. से चला आ रहा है।
- उसके बाद अनेक शहर विकसित हुए।
- 1594 ई. में 2837 शहर थे।
- 20वीं शती तक बोम्बे (मुम्बई), कलकत्ता (कोलकाता) मद्रास (चेन्नई) प्रशासन, वाणिज्य और उद्योग के प्रमुख केन्द्र बन गए।

टिप्पणी

- दिल्ली 1911 ई. में ब्रिटिश भारत की राजधानी बनी लेकन दिल्ली का इतिहास बहुत पुराना है। ऐसा माना जाता है कि सात महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों को मिलाकर दिल्ली क्षेत्र बना। ये सम्भवत: हैं इन्द्रप्रस्थ, लालकोट, महरौली, सीरी, तुगलकाबाद, फिरोज़ाबाद और शाहजहानाबाद।

पाठान्त प्रश्न

1. हड़प्पा सभ्यता की स्थापत्य कला का वर्णन करें।
2. गुप्त, पल्लव और चौल शासको का भारत की मंदिर स्थापत्य कला में क्या योगदान है?
3. भारत में स्थापत्य कला तथा मूर्तिकला की कौन सी विभिन्न शैलियाँ हैं?
4. भारत की स्थापत्य कला के विकास में बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म का क्या योगदान हैं? चर्चा करें!
5. दिल्ली सल्तनत शासन में निर्मित स्मारकों पर अपने विचार रखें!
6. मुगलकाल के दौरान स्थापत्य कला भारतीय, फारसी, मंगोलिया तथा मुगल शैली का सम्मिश्रण है, विस्तार से लिखें।
7. दिल्ली की कहानी अपने शब्दों में लिखें।
8. 'दिल्ली है दिलवालों की' कहावत की सच्चाई मालूम करके एक निबन्ध लिखें। आप इन्टरनैट से भी खोजकर लिख सकते हैं या पुस्तकालय से पुस्तक लेकर लिखें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

13.1 1. उप-महाद्वीप के महान साम्राज्यों तथा राजवंशों के उदय तथा पतन ने भारतीय संस्कृति की वृद्धि तथा आकृति को प्रभावित किया।

2. मोहनजोदाड़ों के सार्वजनिक स्नानागार उनके यांत्रिक कौशल के साक्ष्य हैं?
3. कुशीनगर
4. लुम्बिनी, सारनाथ, बोधि वृक्ष, कुशीनगर
5. गुप्तकाल के दौरान
6. भगवान बुद्ध से संबंधित धार्मिक स्थापत्य अवशेष।
7. गुजरात में लोथल स्थान पर

13.2 1. लकड़ी में नक्काशी करके बना विशाल महल

2. सांची स्तूप तथा सारनाथ स्तूप

टिप्पणी

3. मोनोलिथिक (Monolithic) खम्भों पर
4. गान्धार कला

   मथुरा स्कूल

   अमरावती स्कूल
5. उड़िसा में
6. राष्ट्रकूट
7. पल्लव लोगों ने
8. एक मंदिर का स्थापत्य जिसमें विमान या शिखर (कुण्डलाकार), ऊंची दीवारें तथा गोपुरम् से ढके द्वार
9. बृहदेश्वर मंदिर
10. शिखर (सीढ़ीनुमा) गर्भगृह (मन्दिर के अन्दर का भाग) मण्डप (खम्भो वाला हॉल) से युक्त मंदिर बनाए गए।
11. नरसिंह देव I
12. दिलवाड़ा जैन मंदिर

13.3 1. गुम्बद, मेहराब, मीनार
2. दिल्ली में कुव्वैतली इस्लाम मस्जिदें
   - कुतुब मीनार–दिल्ली में
   - मोहम्मद तुगलक का मकबरा
   - फिरोजशाह तुगलक का मकबरा
   - इब्राहिम लोदी का मकबरा–दिल्ली में
   - शेरशाह का मकबरा–सासाराम में
3. गोल गुम्बद
4. मुगल काल में जड़ाऊ काम से सजाये गए भवनों का निर्माण किया गया।
5. बुलंद दरवाजा

13.4 1. बेसिलिका बूम जीसस तथा सेन्ट फ्रांसिस का चर्च
2. लुटियन्ज
3. ग्रीक एवं रोम की स्थापत्य कला शैली
4. औपनिवेशिक कला कृतियों से भरा संग्रहालय
5. फ्रैंच वास्तुशिल्पी कॉरबूसियर

6. आस्ट्रिया का वास्तुशिल्पी स्टेन

7. 1. राज रेवल

2. चार्ल्स कोरिया

13.5 1. हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगन, सरकोदा, राजगिरि, वाराणसी, अयोध्या, हस्तिनापुर, उज्जैन, श्रावस्ती, कपिलवस्तु, कौशाम्बी या अन्य जो इस पाठ में नहीं दिए गए।

2. कोई पाँच–पणजी, बम्बई, मछलीपट्टनम्, नागपट्टनम्, मद्रास, कलकत्ता या कोई अन्य जो इस पाठ में न दिए गए हों।

3. कोई पाँच–मसूरी, शिमला, नैनीताल, दारजिलिंग, शिलांग, नीलगिरि, कोडईकनाल या कोई और जो इस पाठ में नहीं दिया गया।

4. नागरिक सेवा के अफसर

5. सैनिक अफसर

13.6 1. उच्च न्यायालय भवन, बर्फखाना, सेंटजॉर्ज का चर्च, सामान्य पोस्ट आफिस या कोई अन्य जो इस पाठ में न दिया गया हो।

2. कोई चार- हावड़ा पुल, मार्बल पैलेस, राइटर्स बिल्डिंग, फोर्ट विलियम, ईडन गार्डन्स, विक्टोरिया मेमोरियल हाल या कोई अन्य जो इस पाठ में न दिया गया हो।

3. कोई चार- सचिवालय, काउन्सिल हौल, एल्फिन्स्टन कॉलेज, विक्टोरिया टर्मिनस (आधुनिक छत्रपति शिवाजी टर्मिनस), गेटवे आफ इण्डिया या अन्य जो इस पाठ में न दिये गये हों।

13.7

क्रमांक	*नगर*	*निर्माता*
1.	इन्द्रप्रस्थ	युधिष्ठिर
2.	लालकोट	अनंगपाल तोमर
3.	मेहरौली	पृथ्वीराज चौहान
4.	सीरी	अलाउद्दीन खिलजी
5.	जहांपनाह	मुहम्मद बिन तुगलक
6.	तुगलकाबाद	गियासुद्दीन तुगलक
7.	फीरोजाबाद	फीरोजशाह तुगलक
8.	दीनपनाह	हुमायुँ
9.	शाहजहानाबाद	शाहजहाँ

2. कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, निजामुद्दीन औलिया, शेख नसीरूद्दीन मुहम्मद, अमीर खसरो या अन्य जो इस पाठ में नहीं दिए गए हों।